11.10.20
3

अथ भौमादीनामुदयादिदिनानां निर्देशः —

भौमस्यास्तादुदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं क्रमात्स्या-
न्मासैर्वेदैरथ, दशमितैर्लोचनाभ्यां च दिग्भिः।
जीवस्योर्व्या सचरणयुगैः सागरैः साङ्घ्रिवेदैः;
साङ्घ्र्येकेन त्रियुगदहनैरर्धयुक्तैस्तथाऽर्कैः॥

अन्वयः — भौमस्य अस्तात् वेदैः, अथ दशमितैः लोचनाभ्यां, दिग्भिः च मासैः क्रमात् उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं स्यात्। जीवस्य उर्व्या सचरणयुगैः सागरैः साङ्घ्रिवेदैः (मासैः क्रमात् उदय-कुटिलर्जुत्वमौढ्यम् स्यात्), तथा आर्केः साङ्घ्र्येकेन अर्धयुक्तैः त्रियुगदहनैः (मासैः क्रमात् पूर्वोक्तं ज्ञेयम्)।

तारा — भौमस्य मंगलस्य, अस्तादनन्तरं, वेदैः चतुर्भि-र्मासैः, अथ दशमितैः मासैः दशभिर्मासैः, लोचनाभ्यां नेत्राभ्यां द्वाभ्यामित्याशयः, दिग्भिः दशभिः च मासैः क्रमात् उदय-कुटिलर्जुत्वमौढ्यम् उदयः, कुटिलत्वं वक्रत्वं, ऋजुत्वं मार्गत्वं, मौढ्यम् अस्तः, एतच्चतुष्टयं भवति, जीवस्य गुरोः, अस्तात् उर्व्या मासैकेन, सचरणयुगैः सपादचतुर्भिर्मासैः, सागरैः चतुर्भिर्मासैः, साङ्घ्रिवेदैः सपादचतुर्भिर्मासैः क्रमात् (उदय-कुटिलर्जुमौढ्यं स्यात्) तथा आर्केः शनेरस्तादनन्तरं साङ्घ्र्येकेन सपादैकेन मासेन, तथा अर्धयुक्तैः त्रियुगदहनैः क्रमेण सार्धत्रिभिः, सार्धत्रिभिः च मासैः उदयादिकं ज्ञेयम्।

भावार्थः — पश्चिम दिशा में मंगल के अस्त होने से ४ मास (१२० दिन) के बाद पुनः पूर्व में उदय होता है। उदय होने के १० मास (३०० दिन) के बाद वक्री होता है। वक्री होने के २ मास (६० दिन) के बाद मार्गी होता है। मार्गी होने के १० मास (३०० दिन) के बाद पुनः पश्चिम में अस्त होता है। यही उसके उदय-अस्त आदि का क्रम है।

P.T.O.

ग्रहलाघवम्

शास्त्री - III

11.10.20

1

अथ बुधशुक्रयोर्वक्रोदयादिकालावधिं निर्दिशति —

पूर्वास्ताद्दुदयः परेऽनृजुगतिस्तोयास्तमैन्द्र्युद्गमो
मार्गोऽस्तोऽत्र च, दन्तदन्तदहनावध्याऽश्यशदन्तैर्दिनैः।
चान्द्रैस्तत्परतत्परं त्वथ भृगोस्तद्वद्द्विमास्या ततो-
ऽष्टाभिर्व्यङ्घ्रिभुवाङ्घ्रिणा, विधरणैकेनाष्टमासैः क्रमात्॥

अन्वयः - दन्तदन्तदहनावध्याऽश्यशदन्तैः दिनैः चान्द्रैः क्रमात् पूर्वास्तात् परे उदयः अनृजुगतिः तोयास्तम् ऐन्द्र्युद्गमः मार्गः अस्तः स्यात्, तत्परतत्परम् अथ द्विमास्या ततः अष्टाभिः व्यङ्घ्रिभुवा अङ्घ्रिणा विधरणैकेन च अष्टमासैः भृगोः तद्वत्।

तारा - दन्तदन्तदहनावध्यज्याशदन्तैः दन्त 32 दन्त 32 दहन 3 अब्ध्य 16 आऽज्याश 3 दन्तैः 32 दिनैः चान्द्रैः बुधस्य, क्रमात् पूर्वास्तात् पूर्वदिगस्थान्तरं, परे पश्चिमायाम्, उदयः, ततः, अनृजुगतिः वक्रगतिः, ततः तोयास्तं पश्चिमायाम् अस्तः, ततः ऐन्द्र्युद्गमः पूर्वस्यां दिशि उदयः, ततो मार्गः मार्गगतियुक्तः, तत्पश्चादत्र पूर्वस्याम् अस्तः स्यात्।

अथ तत्परतत्परं क्रमेण वारं वारं पूर्वास्तात् परे उदयः, ततः परं क्रमेण द्विमास्या मासद्वयेन, ततोऽष्टाभिर्मासैः, व्यङ्घ्रिभुवा पादोनैकमासेन, ततोऽङ्घ्रिणा मासस्यचतुर्थांशेन ततो विधरणैकेन मासेन, ततोऽष्टमासैः, भृगोः शुक्रस्य, तद्वत् उदयादिकं भवति।

भावार्थः - पूर्व दिशा में बुध के अस्त होने से दन्त 32 दिन के बाद उसका पश्चिम में उदय होता है और उदय होने के 32 दिन के बाद बुध की वक्रगति होती है। वक्रगति होने के दहन 3 दिन के बाद इसका पश्चिम में अस्त होता है। पश्चिम में अस्त होने अब्धि 16 दिन के बाद पूर्व में उदय होता है। पूर्व में

P.T.O

11.10.20
4

पश्चिम दिशा में गुरु के अस्त होने के 1 मास (30 दिन) के बाद गुरु पुनः पूर्व में उदय होता है। पूर्व में उदय होने के सवा चार मास (128 दिन) के बाद वक्री होता है। वक्री होने के 4 मास (120 दिन) के बाद मार्गी होता है और मार्गी होने के सवा चार मास (128 दिन) के बाद पश्चिम में अस्त होता है। यही इसके उदय-अस्त आदि का सामान्य क्रम है।

पश्चिम दिशा में शनि के अस्त होने के सवा मास (38 दिन) के बाद शनि का पुनः पूर्व दिशा में उदय होता है। उदय होने के साढ़े तीन मास (105 दिन) के बाद वक्री होता है। वक्री होने के साढ़े चार मास (135 दिन) के बाद मार्गी होता है और मार्गी होने के साढ़े तीन मास (105 दिन) के बाद पश्चिम दिशा में अस्त होता है। यही क्रम शनि के उदय-अस्त-मार्गी-वक्री होने का है।

डॉ० सुधीर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

11.10.20
2

उदय होने के आकाश अग्नि ३ के बाद यह मार्गी होता है और। मार्गी होने के ३२ दिन के बाद पूर्व में बुध अस्त होता है। यही क्रम बार-बार होता रहता है।

इसी प्रकार पूर्वदिशा में शुक्र के अस्त होने के २ मास के बाद इसका पश्चिम दिशा में उदय होता है। पश्चिम दिशा में उदय होने के २४० दिन (८ मास) के बाद शुक्र वक्री होता है। वक्री होने के २२ दिन बाद पश्चिम दिशा में अस्त होता है, अस्त होने के ८ दिन बाद पूर्वदिशा में उदय होता है। उदय होने के २२ दिन के बाद मार्गी होता है। मार्गी होने के पुनः ८ मास (२४० दिन) के बाद पूर्व दिशा में अस्त होता है। यही इसके उदय-अस्त-मार्गी-वक्री होने का क्रम है।

डॉ० सुदिस्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महाविद्यालय,
पूर्णियाँ।